सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 34
सप्तम् अंक
फरवरी 2021

इस अंक में...

7 सम्पादकीय
9 समसामयिक सामान्य ज्ञान
13 आर्थिक परिदृश्य
18 राष्ट्रीय परिदृश्य
22 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
27 क्रीड़ा जगत्
31 व्यक्ति परिचय
32 विज्ञान समाचार
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
40 सारभूत तत्व कोष

लेख

44 कॅरियर सलाह
47 पारिस्थितिकी लेख—हिमालय की नष्ट होती जैव-विविधता को बचाना होगा
48 विज्ञान लेख—धरती पर जीवन का विकास-क्रम : कुछ नूतन शोध
50 प्रतिरक्षा लेख—दुश्मन के लिए बेहद घातक है पिनाक रॉकेट एवं मिसाइल प्रणाली
51 प्रौद्योगिकी लेख—पहला वैश्विक आर्टिफिशियल और भारत इंटेलिजेंस शिखर सम्मेलन
53 पर्यावरण लेख—सर्दियों में बढ़ती वायु प्रदूषण की समस्या

हल प्रश्न-पत्र

55 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) लेवल परीक्षा, 2019
80 राजस्थान प्री. डीएल.एड. (सामान्य/संस्कृत) प्रवेश परीक्षा, 2020
94 राजस्थान पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2019
104 आर.पी.एफ./आर.पी.एस.एफ. कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2018

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2019

112 तर्कशक्ति
115 संख्यात्मक अभियोग्यता
119 English Language

मॉडल हल प्रश्न-पत्र

122 आगामी बिहार पुलिस कॉंस्टेबिल (सिपाही) भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
128 आगामी राजस्थान पटवार भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

136 ज्ञान वृद्धि कीजिए
138 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

जीवन का नवीनीकरण कीजिए

"Our words can lead us down a path of renewal and increased personal fulfilment."

—Sandra marinda

माता प्रकृति के साथ मनुष्य के सम्बन्धों में हमको विरोधी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं वह एक ओर तो प्रकृति में व्याप्त व्यवस्था एवं सुन्दरता पर रीझता हआ देखा जाता है और दूसरी ओर वह प्रकृति को मात्र उसके अनन्त भण्डार का अधिकतम दोहन करते हुए अपने पुरुषार्थ की सार्थकता मानता है और इस प्रक्रिया में सर्वत्र प्रदूषण एवं विनाश का प्रसार करता है. मानवीय स्तर पर भी उसके सम्बन्धों की स्थिति भिन्न दिखाई नहीं देती है. नित्यप्रति जीवन में हमारे सामने सहयोग, पारस्परिक सद्भावना एवं सहायता के अवसर आते रहते हैं, परन्तु हमारा आत्मकेन्द्रित मस्तिष्क उन अवसरों को संघर्ष, मतभेद, एकाकीपन, ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा आदि में परिवर्तित कर देता है. वह प्रेम और सहयोग की बात करता है, परन्तु व्यवहार में द्वेष एवं विरोध का मार्ग अपनाता है. पंचशील के सिद्धान्त को वह मानव-मन की श्लाघनीय उपलब्धि बताता है और उसके नाम पर पशुओं में प्राप्त सहअस्तित्व का ढिंढोरा पीटते हुए सहजीवन की नैसर्गिक प्रवृत्ति को सुविधा के साथ तिलांजलि दे देता है. यह एक बहुत ही दुःखद एवं विडम्बनापूर्ण स्थिति है. जब इतनी श्रेष्ठ सम्भावनाएं मानव के सम्मुख उपलब्ध हैं, तब वह अपने लिए गन्दगी भरे वातावरण का सृजन क्यों करता है? सम्भवतः मनुष्य के अन्तर्मन में विरोधी प्रवृत्तियों का जन्मजात निवास रहता है. समस्या यह रहती है कि वह उदात्त प्रवृत्तियों की शृंखला किस प्रकार बनाए रखे? शिक्षा इस मनोवृत्ति का ज्वलन्त उदाहरण है. मनुष्य शिक्षा ग्रहण करने का उपक्रम तो करता है, लेकिन अन्तर्निहित उदात्त शक्तियों का उद्घाटन और व्यवहार में शिक्षा को सामान्य ज्ञान सम्बन्धी सूचनाओं में सीमित कर देता है. प्रश्न यह है कि हमारी शिक्षा-पद्धति में जब नैतिकता, धार्मिकता, मानवता आदि के प्रति उन्मुख करने का कोई प्रावधान नहीं है, तब हम वास्तविक शिक्षा के प्रति, जीवन के अपेक्षित उद्देश्य के प्रति अपने युवा वर्ग को किस प्रकार उन्मुख करें? समाधान है अपनी दृष्टि को भीतर की ओर करें. सूफी कवि मौलाना रूमी का यह कथन हमारा मार्गदर्शन कर सकता है—''ए दोहरी दृष्टि वाले मनुष्य, ध्यानपूर्वक मेरी बात सुनो. अपनी दोषपूर्ण दृष्टि के उपचार के लिए अपने दिल की आवाज सुनो.'' परन्तु विडम्बना यह है कि हमारे सम्पूर्ण समाज के व्यवहार में दोहरी-दृष्टि का प्राधान्य देखने को मिलता है, अर्थात् कथनी और करनी भिन्न दिखाई देती हैं. साथ ही लेने और देने के मापदण्ड भिन्न बन गए हैं; सम्पूर्ण समाज में दोहरे मापदण्ड प्रचलित हो गए हैं इसके अतिरिक्त हमारे जीवन में अन्दर देखना अप्रासंगिक हो गया है, तथा अन्दर की आवाज सुनना अथवा उसकी बात करना पिछड़ापन अथवा ढोंग माना जाने लगा है.